पाठ-32

चंद्रशेखर आजाद

दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे।

आजाद ही रहे हैं, आजाद ही रहेंगे।

ऐसी विचारधारा के समर्थक अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद का जन्म 23 जुलाई, 1906 को अलीराजपुर जिले (मध्य प्रदेश) के भावरा ग्राम में हुआ था। इनके पिता पं0 सीताराम तिवारी मूलरूप से उन्नाव जिले (उ0प्र0) के बदरका ग्राम के रहने वाले थे। इनकी माता जगरानी देवी थीं। ये बचपन से ही न्यायप्रिय व उच्च विचारों वाले थे।

चंद्रशेखर का विद्यार्थीजीवन पाँच-छह वर्ष की अवस्था से आरंभ हो गया था। ये अपने बड़े भाई सुखदेव के साथ गाँव की पाठशाला में पढ़ने जाते थे। जब ये चैदह वर्ष के हुए तो माता-पिता से काशी जाकर शिक्षा ग्रहण करने का आग्रह किया परंतु माता-पिता की अनुमति न मिलने पर बिना बताए ही अध्ययन हेतु काशी चले गए। इनकी शिक्षा की व्यवस्था काशी के दानी-धर्मात्माओं द्वारा विद्यालय को दिए जा रहे अनुदान से हुई।

चंद्रशेखर बनारस में संस्कृत का अध्ययन कर रहे थे, उसी समय दिसम्बर 1917 में अंग्रेजी शासन द्वारा रॉलट एक्ट लाया गया। इस एक्ट द्वारा क्रांतिकारियों के दमन हेतु कानून बनाया गया था। गांधी जी के नेतृत्व में पूरे देश में रॉलट एक्ट का विरोध हो रहा था। वैशाखी के दिन 13 अप्रैल, सन् 1919 को रॉलट एक्ट के विरोध में अमृतसर के जलियाँवाला बाग में एक सभा हो रही थी। इस सभा में बच्चे, बूढ़े और युवक सभी शामिल थे। सभा के दौरान जनरल डायर ने निहत्थे और शांतिपूर्ण सभा कर रहे लोगों पर, हथियार बंद सैनिकों को गोली चलाने का आदेश दे दिया; जिससे सैकड़ों लोग हताहत हुए। पंजाब की इस घटना की जानकारी चंद्रशेखर को समाचार-पत्रों से मालूम हुई। अंग्रेजी शासन के इस अत्याचार के विरुद्ध किशोर चंद्रशेखर का खून खौल उठा। इन्होंने अंग्रेजी सरकार द्वारा अपने देशवासियों पर किए जा रहे अत्याचारों का प्रतिशोध लेने की मन में ठान ली। इस समय चंद्रशेखर की अवस्था मात्र चैदह वर्ष की थी।

सन् 1921 में गांधी जी के असहयोग आंदोलन के चलते पूरे देश में अंग्रेजी शासन के विरोध की लहर फैल गई। समस्त देशवासी अंग्रेजी शासन का तख्ता पलट करने को आतुर हो गए। लोग विदेशी कपड़ों व अन्य वस्तुओं का बहिष्कार करते हुए उन्हें जलाने लगे। इस स्वदेशी आंदोलन के प्रभाव से चंद्रशेखर भी अछूते न रहे और आंदोलन में शामिल हो गए। जहाँ भी जुलूस व हड़तालें होतीं, चंद्रशेखर तत्काल वहाँ पहुँच जाते। बचपन की कठिन परिस्थितियों ने इन्हें कष्ट सहिष्णु, कठोर परिश्रमी व संघर्षशील बना दिया था।

सन् 1921 के अंत में ब्रिटेन के युवराज भारत-यात्रा पर आए। उनके आगमन का पूरे भारत में विरोध किया गया। इसी क्रम में महात्मा गांधी को गिरफ्तार कर लिया गया। इस घटना के विरोध में बालक चंद्रशेखर ने बनारस के सरकारी

विद्यालय पर धरना दिया। इसके बाद एक जुलूस का नेतृत्व किया। जुलूस अपनी तीव्र गति से जब उत्साह, उमंग और जय-जयकार के साथ आगे बढ़ता जा रहा था, तभी पुलिस बल वहाँ आ पहुँचा। कुछ नवयुवक तो भाग गए किंतु उनके नेता और दो-तीन साहसी नवयुवक नारेबाजी करते रहे-भारत माता की जय। पुलिस ने सबसे पहले जुलूस का नेतृत्व करने वाले नवयुवक को पकड़ा, जिसका नाम चन्द्रशेखर था। बालक चंद्रशेखर अपनी गिरफ्तारी पर जरा भी व्याकुल नहीं हुए। पहले की ही तरह उनके मन में जोश, चेहरे पर प्रसन्नता दिख रही थी। उन्हें हवालात में डाल दिया गया। सर्दी का मौसम था और रात का समय। हाड़ कँपा देने वाली इस ठंड में पुलिस अधिकारी ने उन्हें ओढ़ने के लिए कंबल तक नहीं दिया, ताकि बालक ठंड से विचलित होकर उससे क्षमा माँगे। किंतु ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। रात के दो बजे जब पुलिस अधिकारी बालक चन्द्रशेखर को देखने पहुँचा तो देखकर स्तब्ध रह गया। वह दंड-बैठक कर रहे थे; और उनका शरीर पसीने से नहाया हुआ था। अगले दिन बालक चंद्रशेखर को मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया। मजिस्ट्रेट क्रांतिकारियों को कठोर दंड देने के लिए प्रसिद्ध था।

अदालत लगी थी। कटघरे में सुंदर, गठीला नौजवान खड़ा था।

मजिस्ट्रेट ने पूछा-''तुम्हारा नाम क्या है ?''

''आजाद !'' लड़के ने निडरता के साथ जवाब दिया।

इस बार मजिस्ट्रेट ने कड़कदार आवाज में पूछा-''पिता का नाम ?''

''स्वतंत्र!''

मजिस्ट्रेट अपने प्रश्नों का उत्तर ऐसी ललकारती आवाज में सुनकर दंग रह गया।

मजिस्ट्रेट ने फिर पूछा-''तुम्हारा घर कहाँ है ?''

''जेलखाना!''

निडर चंद्रशेखर के उत्तर को सुनकर मजिस्ट्रेट आगबबूला हो गया। झल्लाकर उसने बालक चंद्रशेखर को पंद्रह बेंतों की कठोर सजा सुनाई। हँसते-हँसते व भारत माता की जय बोलते हुए इन्होंने पंद्रह बेंतों की सजा झेली। इसी घटना ने बालक चंद्रशेखर को चंद्रशेखर आजाद बना दिया। चंद्रशेखर आजाद अब क्रांति के पथ पर अग्रसर हो चले। इनके विचारों और निर्भीकता की ख्याति चारों तरफ फैल गयी थी। इसे देखते हुए इन्हें 'हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' का सदस्य बनाया गया। इस संस्था का उद्देश्य न केवल स्वतंत्रता प्राप्त करना था, वरन् शोषण रहित प्रजातंत्र की स्थापना करना था।

काकोरी रेलवे स्टेशन के निकट 9 अगस्त, 1925 को सरकारी खजाने को लूटने की घटना में आजाद की महत्वूपर्ण भूमिका रही। इस लूट में दस लोग शामिल थे। इनके अधिकांश साथी पकड़े गए और कुछ को फाँसी की सजा दी गई; किंतु आजाद की छाया तक को पुलिस न छू सकी।

साइमन कमीशन के विरोध में सन् 1928 में हुए प्रदर्शन में पुलिस की मार से लाला लाजपत राय की मृत्यु हो गई; जिसके प्रतिशोध के लिए पुलिस अधिकारी साण्डर्स की हत्या की योजना बनाई गई। इस योजना का नेतृत्व चंद्रशेखर आजाद ने किया। इस योजना में आजाद के साथ भगत सिंह एवं राजगुरू थे। साण्डर्स की हत्या के लिए अंग्रेजी शासन किसी को भी नहीं पकड़ सका। आजाद इस कार्य के बाद लाहौर से बाहर चले गए।

आजाद ने कालांतर में एक नए क्रांतिकारी दल का गठन किया जिसका नाम 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' रखा गया। आजाद इस संगठन के आजीवन सेनानायक रहे। वह सदैव अंग्रेज सरकार की आँख की किरकिरी बने रहे, किंतु अंग्रेज सरकार उन्हें कभी पकड़ न सकी।

वह क्रूर शुक्रवार का दिन 27 फरवरी, सन् 1931 को आया, जब आजाद अल्फ्रेड पार्क, इलाहाबाद में अपने क्रांतिकारी साथियों के साथ मंत्रणा कर रहे थे। अंग्रेजी शासन को उनके अल्फ्रेड पार्क में उपस्थित होने की सूचना मिली।

पूरा पार्क पुलिस द्वारा घेर लिया गया। चारों तरफ से गोलियाँ चल रही थीं। आजाद ने भी प्रत्युत्तर में गोली चलाई। उन्होंने अपने अन्य साथियों को सुरक्षित बाहर निकाल दिया और स्वयं पुलिस से मोर्चा लेते रहे। जब आजाद के पास एक ही गोली बची तो उन्होंने स्वयं की कनपटी पर गोली मारकर अपने जीवन की इतिश्री कर ली।

चंद्रशेखर आजाद ने पहले ही प्रतिज्ञा की थी कि वे कभी जीते जी अंग्रेजी शासन के हाथ नहीं आएँगे। अंत तक उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा का मान रखा।

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. चंद्रशेखर आजाद का जन्म स्थान भारत के किस राज्य में स्थित है ?

2. जलियाँवाला बाग कहाँ स्थित है ?

3. जलियाँवाला बाग कांड में किसने गोली चलाने का आदेश दिया था ?

4. आजाद ने किस क्रांतिकारी संस्था का गठन किया ?

5. चंद्रशेखर आजाद ने क्या प्रतिज्ञा की थी ?

6. मिलान कीजिए-

(क) जलियाँवाला बाग घटना	(अ) इलाहाबाद
(ख) अलीराजपुर	(ब) काकोरी
(ग) अल्फ्रेड पार्क	(स) अमृतसर
(घ) सरकारी खजाने की लूट	(द) मध्य प्रदेश